

# RAS

सामान्य अध्ययन पेपर-I

भाग-I

राजस्थान की विरासत कला ओर संस्कृति



## राजस्थान की विरासत, कला और संस्कृति

CONTENTS	PAGE NO.
• राजस्थान का इतिहास	1-30
• मारवाड़	31-44
• बीकानेर के राठौड़	45-51
• चौहानो का इतिहास	52-69
• शहरों का इतिहास	70-94
•आधुनिक राजस्थान का इतिहास	95-102
•राजस्थान में किसान एवं जनजाति	103-125
आंदोलन	
•राजस्थान का एकीकरण	126-134
•कला और संस्कृति	135-154
•राजस्थान के लोक देवी,देवता	155-184
और संत	
•सम्प्रदाय	185-190
•राजस्थान के लोकगीत लोकनृत्य व	199-220
नाट्य	
•राजस्थान की जनजातियां	221-230
•राजस्थान की चित्रकला एवं हस्तकला	231-250
•राजस्थान के पुरातत्विव स्थल	251-260
•राजस्थान का साहित्य	261-274



#### रामस्यान 6. к.

र्वतिहास प्रशासन भूगोल अर्धव्यवस्था कला व संस्कृति विज्ञान (राज व्यवस्था)

Part (1) 5 तिहास (History)

\* इतिहास !

### मध्यकालीन इतिहास

## (1) मेवाड का इतिहास:

• मैवाउ के प्राचीन नाम : <u>मेदपाट</u> , प्रागवाट, जिविजनपद

( ड्रेंगरपुर **, बास**वाडा)

• "गुहिल वंश" का शासन था

- अहिल वंश" का शासन था

- अस वंश की <u>अप शाखाएं</u> थी। इनमें सबसे अध्य प्रसिद्ध मेवाड के गुहिल थे।

- पहला बडा राजा बापा रावल था

1) - वाप रावत :

(अ) - वार्-ताविक नाम - कालमोन"

- यह हारिए ऋषि का अनुयायी था । इसने हारित ऋषि

के अव्विविद से 134ई में मान मीर्य (चित्तींड का राजा)

की धराबद चित्तींड पर अधिकार कर लिया।

> इसने नागदा (उदयपुर) की राजधानी बनाया।



(अभी है काजा की सम्बद्ध की सम्बद्ध (अभी है काजूरी)

मानते थे। एक होगानी का दीवान (प्रधानकी)

अपा रावल ने मेवाउ म खुद है नाम है सिक्हे चलावे

शजहानी: न्यारा आहुड़ चित्रींड

अल्लट / आलु रावल :

→ इसने आहड़ (उदयपुर) हो 2<sup>10</sup> राजधानी बनाई → इसने आहड़ में वराट (बिछ्यु भगवान का क्राब्यूर) मिन्दिर बनवाय। → सबसे पहले मैवाड़ में नौंकरशाही ही स्थापना ही। • इंसने हूळा राजकुमारी हिरिया देवी से भादी ही थी।

अताला का सुद्ध (1213 - 50)

अताला का सुद्ध (1234 ई॰ में) "अंगसिंह थुड उत्तृतिम्रा"
के बीच हुआ दस युद्ध में अंगसिंह जीत अचा लेकिन
कल्तुतिम्रा में नागदा (उदयपुर) की उजाड दिया था
उसालर जंगसिंह ने चित्तेंड की अगनी राजधानी बनाया।

इस युद्ध की जानकारी "जयसिंह सूरी" की किताब
"हम्मीर मद मदन" से मिलती है।

, अंगसिंट का शासनकाल "महयकालीन "मैवाड का स्वर्णकाल" था।



(1302 - 03) छोटा भाई कुम्भक्रम नेपाल चला गया । तथा "रागा शाही वंश" ही स्थापना ही । इस तरह से पराँ ग्रहिल की की एक शास्त्रा बनी। → 1303 ७ में अलाउदीन खिलनी का चित्रेंड पर आक्रमना अग्राज्या है हारण इ अलाउदीन खिलाजी की साम्राज्यवादी महलकांसा → चित्तौंड *का सामिरि*क व व्यापारिक महत्व → सुल्तान है लिए प्रतिष्ठा हा प्रश्न था। → चित्रीं का बद्दा हुआ प्रयाव रानी पदमिनी — सिंख दीप (भीलंडा) → गन्धर्वसेन (पिता) → चम्मावरी (माता) (यहाँ अरब साञार (भारे भी ज्यापार होता था) पड़ता गोर। (भाई) , बादल (भतीमा) सिंहल द्वीप (श्रीलंडा ) ही राज्युमारी थी। सिंहल यहाँ ही आति थ "राधव चैतन" (रतनसिंह न दरबारी) ने अलाउदीन ही पद्मिनी सन्दरता है बारे में बताया था। अलाउदरीन खिलजी है समय ''चित्रेंड में पहला साह्य"हुआ (यां = भीटर + डेसरिया) उस मुद्द में (सार्ड में ) "गोरा व लाउल "(रतन हे सेनापित) लंडरे हुए मारे असे थे। अलाउर्दीन ने चिलेंड पर अग्रमण किया और अपने छोटे "खिम खाँ"डी भीप दिया । तथा चित्रींड डा नाम खिम्नाबाद

कर दिया।

Toppusuoles
Unleash the topper in you

→ थोडे दिनों के जाद चिन्नों "मालदेव सोनगरा" को दे दिया। इसे "मुंघ बाला मालदेव" भी कटा जाता है।

श्रिक्ट किताब पदमावत (1540 ई., अवधी व्याघा मी) लिखी गई

<u>लेख5</u> ₩ <del>17</del> लिं**ड मु**हम्मद आयसी

अर्थ कोरा बादल री चौपाई अर्थ हेमरल सूरि (स्रिजेन होते हैं) -"रावल उपाधि" का प्रयोग करने वाला "अन्तिम राजा रतनसिंह" था।

चित्तौड्याद का अधिकार खिज खाँ मालदेव मोनजरा रावल (बडा भर्छ) बनबीर सोनजरा राजा। (होटे थाई)

Nte: (इसके बाद के सभी राजा अपने नाम के आगे राजा लगारेंने)

( 1326- 64) (रागा हम्मीर)
हम्मीर: ( 1326- 64) (रागा हम्मीर)
हम्मीर ने
सिसोदा अपन (राजसमन्द) है जिनवीर सोनअरा ही हराहर
चित्तीं पर अद्भाग हरहे चित्तीं ही जीत लिया।

सिसोदा गांव है हारण "मैवाड में सिसोदिया भाखा" (गुहिल क्रा डी) हा प्रारम्भ हुआ।

रागा उपाध्य का प्रयोग करने वाला पहला राजा के हम्मीर की "मेवाइ का उद्यारक" कहा आता है (क्योंकि उसमें चिलोंड के अपने कब्ले में लिया था) इसने अववाडी (अन्नपूर्णी माता) माता का मन्दिर चिलोंक में बनवाया। यह मेवाड़ के गृहिल वंश की इक्टदेवी थी)

प्रमिवांड के गृहिल वंश की कुल देनी - बार्गमारा )
रिकार देवी एक कि की एक ही होती है तहा। इन्य देनी

इल की शाखाओं है अनुसार अलग-2 होती है)

211 211 Even pheromotes Unleash the topper in you

पंचानन "(कुम्मलगढ़ प्रशस्ति"में करा राया है।)
और "तीर राजा" (कुम्मा की पुस्तक "रसिक्रप्रिया" में करा राया)

(जयदेव की जीतजोबिन्द पर टीडा)

्रे इराणा लाखा (लह्मसिंह)

अ आवर में चाँदी निक्लना प्रारम्भ हुई।

→ इसके समय में एक बन्जारे ने "पिछोला झील" का निर्माणकरण (बन्जारे उस समय व्यापारी होते थे।) इस झील के पास एक निटनी का चबूतरा" मिलता है। (नट एक जाति है।)

कुम्मा हाडा (हाडी रानी का भाई) नहली बूंदी की रहा करते
 हुए मारा गया। (लाखा ने "हाडी रानी" से शादी की थी)

मेवाड ्राखा ५ (क्रेटा) चून्डा

्री स्थार ने स्थार निर्मा

हंसाबाई रगमल (बेटी) (बेटा)

रिग्ता लैंबर जये लेंबन चुन्डा खुर विवाह न करहे अपने पिता से हंसावाई कें विवाह करवाया |

→ मारवाउ है राजा चुन्ड़ा ने अपनी का बेटी हंसाबाई ही शादी मेवाउ है रामा। लाखा है साथ ही। इस समय लाखा है बेटे चून्डा ने यह प्रतिज्ञा ही हि वह मेवांड़ हा राजा नहीं बनेगा बिल्ह हंसाबाई है जो बेटे होंगे उनहीं बनारोगा इसिल्ए चून्डा हो "मेवाउ हा भीटम" कहा जाता है।

मेंबाइ अ उद्धारक - समीर मेंबाइ अ भीटम - चून्डा

विषमदारी पंचानन वीर शजा

मध्यकालीन मेवाड़ का स्वर्गकाल - जैन बिंह मेवाड़ के गृहिल वंग की काट देली - बरवटी माना (झन्नापूर्णा)

5



इरामा मोकल (1421-33) (ट्समान के का लेटा)

→ पुन्डों ने इसका राजतिलंक किया।

असे त्याग है बदले में चुन्डा की कि विशेषाधिकार (Privilage)

- (1) मेवाड के ७ 16 प्रथम फोनी के ठिकानों में से प पूरा को दिये गये । इनमें सबसे बड़ा ठिकाना (सलुम्बर) भी शामिल था।
- (२) सल्मबर् के शक्या **७ सामन्त** द्वारा मेवाउँ के राजा का राजातिलक किया **॰ जाये**गा ।
- (3) सलूम्बर का सामन्त मेवाउ का सेनापति होगा। तथा "हरावल" का नेतृत्व करेगा। (हरावल - सेना की पटली इक्डी औ युद्ध करती है।) (धन्दावल - सेना की अन्तिम दुक्डी ओ युद्ध करती है।)
- (4) मेवाउं के राजा की अनुपस्थित में सलूम्बर का सामन्त राजधानी के संभालेगा।
- (5) मेवाउ है सभी कागन पानी (Documents) पर राजा के साथ साथ सलूम्बर है सामत है भी हस्ताहर होंगे।
- अपरम्म में चुन्डा मीडल का संरहाड (Patron) था। लीकिन बाद में हंसाबाई के अविश्वास के कारण मेवाड के छोड़कर मालवा के राजा होशंगवाह" के पास चला गया।
- अब हैसाबाई का भाई "रामल" मोक्ल का संरक्षक बना
- अ मोक्टा ने "एडलिंग जी है मन्दिर की चारदीवारी' का निर्माण
- र्भ चित्तें में समिद्वेखर मन्दिर (शिव मन्दिर) हा पुनिनमण कराया यह मन्दिर भेज परमार् द्वारा अनवाया ठाया था तथा पहले इसका नाम त्रिभुवन नारायक। मन्दिर था।
- 1433 में 'जीलवाडा" (इक्कियाजसंमन्द्) नामक स्थाप पर मोकल के सेनापति 'चाचा , मेरा , महपा पंवार" ने मार दिया।



## (8) २१०११ कुम्भा (1433-68) (35 साल)

हरखाबा के नाया मोस्ल में भेटा कुम्मा

→ रगमल कुम्भा का संरक्षक था।

→ कुम्मा ने रगमल की सायता से अपने पिता मोडल की हता का वदला लिया।

→ मेवाउ दरबार में रगमल का प्रभाव बढ़ गया था। 3सने सिसोदिया है नेता राह्यदेव (० चून्डा का भई) ही हत्या करवा दी।

→ हैसाबाई ने चुँडा हो वापस बुलाया तथा <u>भारमली</u> (रामल ही प्रेमिहा) ही सहायता से रगमल ही हत्या हर ही। (स्मोहि हिसाबाई हो आंगाहा थी हिसामल कुम्मा हो भी मार सहता है।) → रगमल हा बेटा ओद्या अपने भाईयों है साथ मेवाइ

→ श्रामल **हो बे**टा औद्या अपने भाईयों है सार्थ मेगाड़ से भाग गया तथा बीहानेर हे पास <u>कावली</u> नामह गाँव में भारा ली।

→ चुन्डा ने बाद में मंडोर पर अधिकार कर लिया (मंडोर – मारवाड की राजधानी)

﴿ १५५३ में द्भुमा और ओंदा है बीच आंवल -बांवल ही सिन्ध्र हुई। इस सिन्ध द्वारा औद्या हो मन्डेंर (मारवाइ ही राजधानी) वापस दे दिया गया। सोजत (पाली) हो मेवाउ में मारवाइ ही सीमा बनाया गया। → इस सिन्ध द्वारा कुम्मा ने अपनी द्वारगित हे माद्यम से मारवाइ बे मिंग राज्य बना लिया।

#### कुम्म। डे शासनकाल के दौरान घटनाक्रम :

भू मारगपुर का सुद्ध (1437 ई॰) (विजयस्तम्म इसी होरान बना)
कुम्भा ४६ महमूद खिलजी (मालवा, M.P.) कारणः महमूद खिलजी ने मोकल के हत्यारों को इश्वारण दी थी।
इस युद्ध में कुम्भा जीत, शया तथा जीत की याद में
४५० महमूद खिलजी , कुत्तुद्दीन शाह (शुक्ररात) के पास भाग असा।

अंबल - बांबल की सन्ति



चाम्पाने र डी सन्धि - (१५५८) शाह + महमूद खिलजी (दौनों मिलं अर्थ) (गुजरात) (मालवा) दोनों मिलकर कुम्या है खिलाफ लक्क्न लड़ना स्म दौरान बदनोर का युड़े"(भीलवाडा) हुआ कुम्भा ने गुअरात व मालवा ही संयुक्त सेना हो हराया। → कुम्मा ने सिरोटी के राजा सहसमल दैवडा के हराया। → क्रम्मा ने एक अलग युद्ध में नागीर के अम्स खाँ की सहायता ही तथा मुजाहिद जा हो हराया (धि दोनों भाई थे) शम्स खाँ <sub>(गर्ह)</sub> मुगाहिर खाँ V. क्रिकामा ही सांस्कृतिक उपलिख्या \* स्थापट्य हला (Architecture): विजयस्तम्म = "सारगप्र युद्ध" में औत की याद में चित्तीं है किले में अनवाया था। अन्य नाम: - कीर्टिस्तम्य ( कुम्मा की कीर्टि की बढ़ाने वाला) (बिट्जा भगवान हो समर्पित) (गरुड -विट्जा हा वाटन) विष्णु ह्वम गर्नेड ह्वे मूर्तियों डा अनायबंधर (इसमें 9 मजिल में से 8वीं मिन्नि वे बोब्द्र राम में आरतीय हैवी - हैवताओं' की मूर्तियाँ हैं') → भारतीय मूर्तिस्ता का विश्वकोष 122 × 30 (Feet) 9 मैं जिला इमारत हैं length hlidth औता (पिता) पूंजां , चीमा , नापा (पुज) अ विजयस्तम्म में 3 वी मंजिल में 9 बार अरबी भाषा में अल्लाह लिखा स्भा है।

यर गमन पुलिस व रामन माह्यामेड बिल्गा चीर्ड का

स्वरूप सिंह" ने इसका पुननिर्माल करवाया था।

मतीक चिन्ट हैं।



अं राज की पहली इमारत जिस पर उाड टिकट जारी हुआ था। ( ) जेम्स टॉड" ने विजयस्तम्भ की जुलना "कुतुबमीना;" से की। ( ) फर्ज्यसन" ने विजयस्तम्भ की जुलना रोम के टार्जन टावर से की।

अन कीर्ति स्तम्म ९ (अगदिनाय स्तम्म)

→ 12वीं शंताब्दी में अन् व्यापारी जीजा शाह बहोरवाल ने बनवाया

→ 7 मंजिला इमारत है।

→ यह भगवान आदिनाय (अन के 154) भगवान की समर्पित है।

(यह जानकारी "अयामलदास" की पुस्तक "वीर विनोर्द" से मिलती हैं।

- (A.) क्रेम्भलगढ़ हा किला (राजसमन्द)
- (B) अचलगढ़ का पुनर्निमाण करवाया। (सिरीडी)
- (c.) मचान दुर्ग (सिरोही)
- (वं) बासन्ती दुर्ग (सिरोध)
- (e.) भोमट दुर्ग (स्थान गत नहीं) (भील जनजाति पर नियगण हेतु यह दुर्ग बनवाया)
- → किलों के माध्यम से कुम्मा ने अपनी सीमामों **हो** सुरवित हिया।

अभितामी मन्दिर अस्तामी अस्ति। अस्ताह



```
चीमुळा मन्दिर हा वास्तुहार
             राजस्थान ही स्थापत्य कला. का जनक" कहा जाता है।
    साहित्य :
*
                       संगीत्ज्ञ था । इन्मा है संगीत गुरु
 -) क्रम्भा एक अन्धा
                          (afton)
    'सारग व्यास' थी।
     संगीत पर पुस्ते
          म्हा प्रबन्ध
          कामराज शिवसार
          >र्यागीत सुधा
          र्संगीत मीमांस
          संगीतं शन
          र पर 5 भाग में विभाजित है।
      V प्रेचाउय रत्न कोष
                                पिढिये , गाईये नाची आपडी बाय
                        कीष
                                      रस मिल आयेगा )
                   रल
                        डोघ
                   201
            + वाहा
                  ₹८-1
                 शीतभोविद पर "र सिरुप्रिया"नाम से टीका लिखी।
 अस्में अयदेव की
       (टीक) - एक छोरा ग्रन्थ रोता था।)
     कुम्भा ने "मंगीत रलाक्त्" व "चाउडी शतक"पर
                                                   af El31
                                                      37 पर दीड़ा लिखी
      Total el 1
      क्रमा ने मेवाडी आवा में प नाटक लिखे
       कुम्भा 'वीना'' अजाया करता था।
```

पुरता - वीरविनोद गीतमोबिन् , स्तम्भी का अज्ञासम्बद्धार स्थापत्य कता का जनक क्रिमल्णाढ प्रशस्ति का लेका



#### कुम्भा के दरबारी विद्वान :

्रेस्वारी विद्वान <u>पुस्तक</u> (i) क्रान्ह व्यास → एक्रीलाँग महात्य

- ② मण्डन → यह कुम्मलगढ़ हा वास्तुहार था।
  → वास्तु सार (वास्तु है नियम)
  → देवमृति प्रहरण। (मृतियों है बारे में)
  → रामवल्लम ] (राजाओं है महल है बारे में)
  → रिष्प मण्डन (प्रतिहला से सम्म्बात्यित)
  → कीर्जंड मण्डन (धनुष निर्माण से सम्बन्धित)
- (3) नाषा (मण्डन मा भाई था) -> वास्तुमंगरी
- (प) गोविन्द (मण्डन का बेटा)

  → कलानिष्ठ

  → उद्घार धोरिजी

  → द्वार दीपिका
- (प्रिंग) अगि / महेस (पिता पुग)

  के "कीर्तिस्तम्म प्रशस्ति"

  \* "महेस" ने "कुम्मलगढ़ प्रशस्ति" भी लिखी थी।



## कुम्मा के जैन बिहान :

- → सीमदेव
- → सीमसुन्दर
- → जयशेखर
- → भुवनडीर्ति
- → तिला भट्ट

पोर्ट कुम्मा ने आबू आने वाले औन तीर्थ थात्रियों से कर (Tax) के लीना वन्द कर दिया था।

## कुम्मा ही उपाधियाँ :

- ि हिन्दु सुरताना
- (मुसलमान) डी टराने डे घारण)
- 2) अभिनव मरतागर्य
- (संगीत ही उपलब्धियों हे कारण)
- 3) शना रासी
- (शसी = साहित्य) (साहित्यकारों को दरबार में रखने के कारण) ( पहाडियों के दुर्ग जीतने का के कारण)

(प) हालगुरु

- ( स्फ अन्छा धाउनधार क्या होने हे कराग)
- (ह) न्याप गुरु
  - ह्माप गुरु (धापामार (गुरिल्ला) युद्ध इस्नै के कारण)

Note: कर दी थी।



## 🎐 रायमल - (१५२३-१५०९)९ (३६साल)

अप्र स्कर्टिंग मंदिर का वर्तमान स्वरुप रुसी नै ब्यावाया था।

> "पृंगार कंवर" उसकी रानी थी। इस रानी ने छोसुन्डी (चित्तींड)

क में बावडी का निर्मात। करवाया।

```
Note:

() हार्निकड़ी अभिलेख:--

अप्न अताबी ई॰ पू॰ का अभिलेख है।

अप राजस्थान में 'वैष्ठाव धर्म' की आनकारी देने वाला सबसे
पुराना अभिलेख हैं।
```

#### पृथ्वीराज

→ यह रायमल का सबसे बड़ा बीटा था।

दसे <u>"उड़</u>ना शनुकुमार" कहा जाता था।

(यह जो राजा धारता था उसकी तरफ होकर लड़ता था)

→ अपनी रानी तारा के नाम पर अजमेर किले का नाम
<u>"तारागढ़" कर दिया।</u>

— कुम्मलगढ़ में इसकी छतरी बनी हुई है।

#### अयमल

→ यह भी रायमल का बेटा था। → यह सोलंडी राजाओं के खिलाफ लड़ता हुआ मारा गया था।



(1509-28): (यह भी रायमल का (1941ल) बेटा था)
अपने भाइयों से अग्डा ही आने के कारण शांगा ने भीनगर (अअमेर) के कम्बन्द पंवार के पास भारण ली थी।

🛪 खातीली का सुद्ध (कीटा) - 1517

भांगा ८५ ६ श्राहिम लोदी (दिल्ली का सुल्लाम) → सोंगा जीत गया

अ वाडी का युद्ध (बीलपुर) - 1519

भोगा V इब्राह्मि लोदी भोगा जीत गया

अ जागरीन का युद्ध (आलावाड) - 1513

भांगा ए॰ मटमूद खिलमी (म) (मालवा , M·P.) → भांगा जीव गया

> कारण : भागरीन हा हिला इस समय सांगा है दौस्त क चन्देरी है राजा मैदिनीराय हे पास था। (भार)

Note: सांगा ने ईड़र (गुजरात) हे उत्तराधिकार संद्यर्ष में गुजरात है राजा मुजस्मार शाह"की हराया था।

भारमल रायमल भारमल रायमल (इसहा पहा (इसहा पहा भागा मुजक्का शाह ने लिया) लेता था।)



अधाना हा युद्ध : (भरतपुर) (LG Feb., 1527)

भांजा ४८ बाबर भांजा ने बाबर ही हराया

Wink (177) (17 March, 1527)

भांगा ४५ वाबर

#### Note:

- () इस पुद्ध से पहले बाबर जिहाद (धर्म युद्ध) ही धोवना इरता है।
- (D) वाबर मुसलिम व्यापारियों से तमजा कर हटा देता है।
- (3) शराब नहीं चीने डी इसम खाता है।
- → इस समय सांगा ने राजस्थान है अन्य राजाघों हो अपनी सहायता है लिए बुलाया।

#### कुछ राज।

अामेर - पृथ्वीराज

मारवाइ - मालदेव (राज्या - जाँगा था उस समय )

बीडानेर - इत्यागमल (राजा - जैतसी थी)

चन्देरी - मेदिनीराय

मेवात - हसन खाँ मेवाती

महमूद लोदी ( रब्बाहिम लोदी हा घोटा आई)

- अशोग युद्ध में धायल हो गया अतः । आला अन्जा ने युद्ध हो नेतृत हिया। परन्तु बाबर युद्ध जीत ज्ञाया था। जीतने हे बाद बाबर ने "गाजी ही अपादि।" धारण ही। (धानवा छा मुद्ध)
- · भानी की उपाधि
- समिडी एतरी



- प्रमान वसवा (दौसा) में भांगा हा इलाज हिया गया।
  - → सांगा चंदेरी है मेदिनीराय ही सहायता है लिए आणो खटा
  - → "ईरिच (M·P)" नामड स्थान पर सोगा के साधियों ने उसे अटर दे दिया।
  - → "कालपी (M.P.)" में सांगा की मृत्यु हो गई।
  - → मांडलगढ़ (भीलवाडा)" में सांगा ही एतरी है। । हरित्

# सांगा ही उपाधियाँ :

#### अपि) हिन्दुपत

अ(2) सीनिकों का अञ्चावशेष ( उसके अारीर पर बहुत धाव थे )

## अ खानवा में सांगा की हार हे कारण:

- → सांगा ही सेना अलग-अलग सेनापतियों के नेतृब में लड़ रही भी अतः अलक उनमें आपस में एकता नहीं भी।
- → बाबर का तोपखाना और तुलगुमा युद्ध पहिति" — तीन तरफ से लड़ना (यह पद्दति बाबर उन्वेक्स्तिम से सीख के आया था )
- अंगा वयाना के भुद्ध के तुरन्त बाद खानवा नहीं पहुँचता हैं तथा वह बाबर की तैयारी के लिए समय है देता है।
- + भागा खानवा के मैदान में खुद युह करने के लिए 3004 उतर गया था।
- → भागा है इहा साथियों ने मांगा है साथ विश्वासवात किया तथा युद्ध के बीच में ही बाबर से ही मिल अधे थें।